

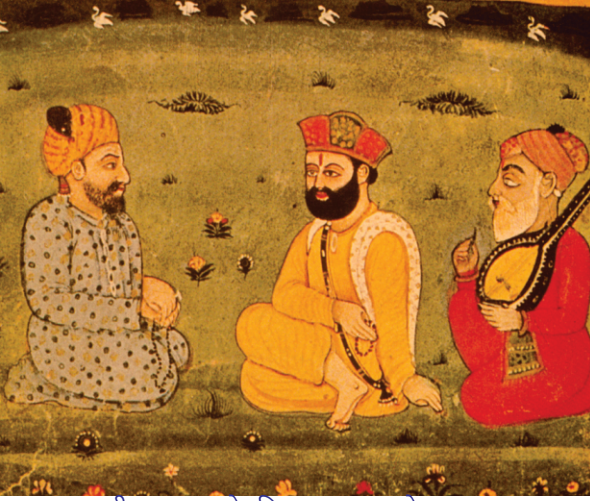
## सिरसा तों पक्खोके

(अते करतारपुर दे कौतक भाग-1)

### हाजी रतन दे सज़दानशीन नाल गोशटी

सिरसा तों 80 कि. मी पहाड़ चल के साहब बठिंडा आए।

बठिंडे विखे हाजी रतन नां दे सूफी पीर दा मकबरा है। इस पीर बारे तरां तरां दियां कहाणियां हन। बहुतियां इस बाबत हन कि उह तकरीबन 700 सालां तक जींदा रेहा। उंज 84 सिद्धां विच वी हाजी रतन नाथ दा नां आउदा है।



हाजी रतन नाल गोशटी। गुरू साहब अते मरदाना

लोकां दा इह मन्नना है कि रतन नाथ बाद विच्च मुसलमान बण गया सी जदों इस ने सुण्या कि अरब विच्च रब्ब दा अवतार पैदा होया है। उदों पंजाब विच इसलाम नूं वक्खरा मज्हब अजे तसलीम नहीं सी कीता गया। मिसाल दे तौर ते अज्ज कोयी हिन्दू, सिरसे वाले डेरे दा चेला रहन्द्यां आपने आप नूं हिन्दू वी अखवा सकदा है।

मुसलमान इस बारे बड़ी अदभुत कथा दस्सदे हन। कन्हन्दे हन कि रतन नाथ बठिंडे दे सौदागर दा पुत्तर सी। इह सौदागर अरब देसां तक्क भारती समान लै के जायआ करदा सी अते इस दा मेल इक्क वेरां मुहंमद साब नाल होया सी जिन्हं ने इस नूं लंमी उमर दी असीस दिती सी।

इह वी केहा जांदा है कि रतन हिन्दी ने महमूद गजनवी दियां फौजां नूं बठिंडे दा किल्हा फतह करन विच्च मदद कीती सी।

जनम साखियां विच्च गुरू साहब दा रतन हिन्दी नाल वी मेल लिख्या है। दूसरे पासे जनमसाखियां दी प्रम्परा जे वेखीए तां उहनां विच्च जित्ये वी गुरू साहब किसे वड्डी

शखसियत दे सथान ते जांदे हन तां जनमसाखियां सथान दे मौजूदा गद्दी नशीन दा नां देन दे बिजाए सिद्धा ही प्रसिद्ध शखसियत नाल मेल दस्सदियां हन क्युकि जनमसाखियां सुणियां सुणाईआं कहाणियां दे अधार ते लिखियां गईआं हन। जनमसाखी लिखारियां वासते मौजूदा गद्दीनशीन दा नां लभना मुशकल ही नहीं असंभव हुन्दा सी। भाव जे गुरू साहब उजैन विखे भरथरी जोगी दी जगा जांदे नें तां ओथे मौजूदा गद्दी नशीन नाल गोशट हुन्दी है, पर जनम साखियां वाले सिद्धा ही भरथरी नाल गल बात दस्सदे हन। एसे तरां किते गोरख नाथ नाल गलबात हुन्दी लिखी है किते शेख फरीद नाल आदि। इह सभ शखसियतां गुरू साहब तों बहुत पहले हो चुकियां हुन्दियां हन।

सो ऐन इहो हालत पीर हाजी रतन दे सजदानशीन अते गुरू साहब दे मेल दी है। जदों गुरू साहब पीर नूं मिलदे हन तां उह गुरू साहब अगो गुजारिश करदे हन कि सानूं आपनी बानी सुणायो। गुरू साहब वजंतरियां नाल बानी दा कीरतन करदे हन।:

प्रभाती महला 1 ॥ तेरा नामु रतनु करमु चाननु सुरति तिथे लोइ ॥ अंधेरु अंधी वापरै सगल लीजै खोइ ॥1॥ इहु संसारु सगल बिकारु ॥ तेरा नामु दारु अवरु नासति करणहारु अपारु ॥1॥ रहाउ ॥ पाताल पुरिया एक भार होवह लाख करोड़ि ॥ तेरे लाल कीमति ता पवै जां सिरै होवह होरि ॥2॥ दूखा ते सुख ऊपजह सूखी होवह दूख ॥ जितु मुखि तू सालाहियह तितु मुखि कैसी भूख ॥3॥ नानक मूरखु एकु तू अवरु भला सैसारु ॥ जितु तनि नामुन ऊपजै सतन होह खुआर ॥4॥2

अन्दाज़ा है कि गुरू साहब इक्क वार फिर माझ दी वार वाले सलोक इथे वी गाए जिन्नां विच्च मुसलमानां बारे टिप्पणिया हन। जिवे:

पउड़ी ॥ इकि रतन पदारथ वणजदे इकि कचै दे वापारा ॥ सतिगुरि तुठै पाईअनि अन्दरि रतन भंडारा ॥ विनु गुर किनै न लध्या अंधे भउकि मुए कूड़यारा ॥ मनमुख दूजै पचि मुए ना बूझह वीचारा ॥ (पूरा शबद वेखी अंग-141)



मकबरा पीर हाजी रतन बठिंडा



ਪੇਸ਼ਾਕਰ ਦਾ ਮੰਦਰ: ਦਰਗਾਹ ਪੀਰ ਰਤਨ ਨਾਥ। ➔



ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਹਾਜੀ ਰਤਨ ਮਕਬਰੇ ਦੇ ਗਵੀ ਨਸ਼ੀਨ ਨਾਲ ਗੋਸ਼ਟਾਂ ਚਲਦਿਆਂ ਰਹਿੰਦੇ। ਜਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਫਿਰ ਸਿਕ੍ਖਾਂ ਦਾ ਇਸ ਅਸਥਾਨ ਤੇ ਆਉਣ ਜਾਣ ਹੋ ਗਏ, ਲਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਪੀਰ ਨੇ ਅੰਦਰੋਂ ਸਿਕ੍ਖੀ ਧਾਰਨ ਕਰ ਲਈ ਸੀ।

ਇਥੇ ਫਿਰ ਦਸਵੇਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦਾ ਵੀ ਆਉਣਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਦਸਮ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਨੇ ਵੀ ਫਿਰ ਮੌਜੂਦਾ ਪੀਰਾਂ ਨੂੰ ਕਬਰਾਂ ਦੇ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਤੋਂ ਅਜਾਦ ਕਰਵਾਏ ਸੀ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸੋਚਨਾ ਸੀ ਕਿ ਮਰਨ ਤੋਂ ਬਾਦ ਵੀ ਪੀਰ ਦੀ ਰੂਹ ਇਥੇ ਹੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ।

ਦਸਮ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਨੇ ਇਥੋਂ ਦੀ ਲੋਕਾਧੀ ਨੂੰ ਇਕੱਕ ਦੇਏ (ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਮੈਂ ਤੋਂ ਵੀ ਮੁਕਤ ਕੀਤਾ ਸੀ।

### ਭੁਚੋ ਮੰਡੀ ਦਾ ਲਵੇਰੀਸਰ

ਬਠਿੰਡੇ ਹੀ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੂੰ ਪਤਾ ਚਲਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਥੋਂ 15 ਕਿ.ਮੀ. ਪੂਰਬ ਵਿਚ ਜਿਥੇ ਅੱਜ ਕਲ ਚਕਕ ਫਤਹ ਸਿੰਘ ਵਾਲਾ ਹੈ ਓਥੇ ਜੋਗਿਆਂ ਦਾ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਮਠੁ ਹੈ। ਭੁਚੋ ਮੰਡੀ



ਲਵੇਰੀਸਰ

ਲਵੇਰੀਸਰ

ਲਾਗੇ। ਸੋ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਆ ਪਹੁੰਚੇ ਜੋਗਿਆ ਨੂੰ ਰਾਹੇ ਪਾਉਣ। ਭੁਚੋ ਮੰਡੀ ਤੋਂ ਦੋ ਕਿ. ਮੀ. ਪੱਛਮ ਵਿਚ ਟਿੱਬੇ ਤੇ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਲਵੇਰੀਸਰ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਸਾਹਬ ਦੇ ਆਗਮਨ ਵੇਲੇ ਇਥੇ ਜੋਗਿਆਂ ਦਾ ਆਸ਼ਰਮ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਜੋਗਿਆਂ ਵੇਲੇ ਇਹ ਗਲ ਮਸ਼ਹੂਰ ਸੀ ਕਿ ਇਹ ਉਹ ਥਾਂ ਹੈ ਜਿਥੇ ਜਾਬਰ ਆਸਹਾਏ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਹੋਏ ਇਸ ਤਰਾਂ ਸੀ ਕਿ ਇਕੱਕ ਗਾਂ ਨੇ ਜਦੋਂ ਜਹਦ ਕਰਕੇ ਆਪਣੇ ਵੱਢੇ ਨੂੰ ਬਘਾੜਾਂ ਤੋਂ ਬਚਾ ਲਿਆ ਸੀ। ਜੋਗਿਆਂ ਨੂੰ ਸਿੱਧੇ ਰਾਹੇ ਪਾਉਣ ਖਾਤਰ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਇਥੇ ਚਰਨ ਪਾਏ।

ਇਹ ਪਵਿੱਤਰ ਅਸਥਾਨ ਪ੍ਰਗਟ ਵੀ ਖੁਦ ਦਸਮ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਇਸ ਅਸਥਾਨ ਤੋਂ ਬਠਿੰਡੇ ਦਾ ਕਿਲਾ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦਾ ਸੀ ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਬਾਨੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਸਾਹਬ ਨੇ ਪਹਲਾਂ ਇਸ ਜੋਗੀ ਡੇਰੇ ਤੇ ਚਰਨ ਪਾਏ। ਵਕਤ ਪਾਕੇ ਢੇਵੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਹਰਗੋਬਿੰਦ ਸਾਹਬ ਵੀ ਇਥੇ ਪਧਾਰੇ। ਇਥੇ ਹੀ ਢੇਵੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਦੇ ਕਹਿਣ ਤੇ ਕਿਸਾਨ ਨੇ ਫੰਡਰ ਮਝਲ ਲਵੇਰੀਆਂ ਵਾਂਗ ਚੋਧੀ ਸੀ ਤੇ ਗੁਰੂ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਨੂੰ ਦੁੱਢ ਅਰਪਨ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਏਸੇ ਕਰਕੇ ਇਸ ਅਸਥਾਨ ਨੂੰ ਲਵੇਰੀਸਰ ਕੇਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਲਗਦਾ ਹੈ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਸਾਹਬ ਇਥੋਂ ਵਾਪਸ ਹਾਜੀ ਰਤਨ ਦੇ ਟਿਕਾਨੇ ਤੇ ਚਲੇ ਗਏ ਬਾਅਦ ਵਕਤ ਪਾ ਕੇ ਓਥੋਂ ਸਰਾਏ ਨਾਗਾ ਨੂੰ ਰਵਾਨਾ ਹੋ ਗਏ।

### ਲਕਖੀ ਜੰਗਲ ਵਿਚ ਮੰਗਲ

ਭੁਚੋ (ਲਵੇਰੀਸਰ) ਤੋਂ ਹੀ ਚਲਦੇ ਹੋਏ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਲਕਖੀ ਜੰਗਲ ਪਹੁੰਚੇ ਸਨ। ਇਥੇ ਜੰਗਲ ਵਿਚ ਇਕੱਕ ਸਝਾਸੀ ਸਾਧ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ ਜਿਸ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਭਗਤੀ ਦਾ ਬੜਾ ਮਾਨ ਸੀ ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਉਹ ਲੋਕਾਧੀ ਨੂੰ ਸਰਾਫ ਆਦਿ ਦੇਣ ਦਿਆਂ ਧਮਕਿਆਂ ਵੀ ਦਾ ਕਰਦਾ ਸੀ। ਉਹਦੀ ਚਰਚਾ ਸੁਣ ਕੇ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਉਸ ਦੇ ਡੇਰੇ ਪਹੁੰਚੇ।

ਲਕਖੀ ਨੂੰ ਸਤਿਨਾਮ ਦਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਦੇ ਕੇ ਉਹਨੂੰ ਜਪੁਜੀ ਸਾਹਬ ਦਾ ਨਿੱਤ ਪਾਠ ਕਰਨ ਦਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਿੱਤਾ। ਕੇਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਲਕਖੀ ਨੇ ਫਿਰ ਲਕਖਾਂ ਵਾਰੀ ਜਪੁਜੀ ਜਪਿਆ। ਇਸ ਤਰਾਂ ਲਕਖੀ ਗੁਰੂ ਸਾਹਬ ਦਾ ਅਨਿਨ ਭਗਤ ਸਾਬਤ ਹੋਏ ਤੇ ਇਲਾਕੇ ਵਿਚ ਸਿਕ੍ਖੀ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕੀਤਾ। ਲਕਖੀ ਸਾਧੂ ਦੀ ਸਮਾਧ ਅੱਜ ਵੀ ਮੌਜੂਦ ਹੈ।

ਗੁਰੂ ਹਰਗੋਬਿੰਦ ਸਾਹਬ ਜਦੋਂ ਚੰਦੂ ਸ਼ਾਹੀ ਨੂੰ ਗ੍ਰਿਫਤਾਰ ਕਰਕੇ ਲਹੌਰ ਲਿਜਾ ਰਹੇ ਸਨ ਤਾਂ ਇਸ ਥਾਂ ਵੀ ਰੁਕੇ ਸਨ। ਚੰਦੂ ਨੂੰ ਜਿਸ ਕਿਲੇ ਨਾਲ ਬਝਾ ਉਹ ਵੀ ਅੱਜ ਤਕ ਮੌਜੂਦ ਹੈ। ਦਸਵੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਜਦੋਂ ਪ੍ਰਥਮ ਗੁਰੂ ਦੀ ਚਰਨ ਛੋਹ ਧਰਤੀ ਨੂੰ ਪਰਸਨ ਆਏ ਤਾਂ ਗਦ ਗਦ ਹੋਏ ਸਾਹਬ ਦੇ ਮੂੰਹ ਵਿਚੋਂ ਆਪ ਮੁਹਾਰੇ ਮਲਵਰ੍ਹੀਆਂ ਦੀ ਧਾਰਨਾ ਤੇ ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਆਪ ਮੁਹਾਰੇ ਮੁਖ ਤੋਂ ਨਿਕਲੇ:

ਲਕਖੀ ਜੰਗਲ ਖਾਲਸਾ, ਆਏ ਦੀਦਾਰ ਲਗਾਉਣੇ ॥



ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਸਾਹਬ ਲਕਖੀ ਜੰਗਲ

सुणन के सद्द माही दा, मेंही पानी घाह मत्तो ने॥  
किसे नाल ना रलिया काई, कोयी सउंक पियो ने॥  
ग्या फिराक मिल्या मीत माही, ताही सुकर कीतो ने॥

लकखी जंगल असल विच्च सिंध विच्च कराची दे इलाके विच्च हुन्दा सी जिथों दे घोड़े मशहूर सन। गुरू साहब ने लकखी भगत होन करके इसे इलाके नूं लकखी जंगल दा खिताब दे दिता सी।



लकखी साधू दी समाध

जिथे अज्ज इह असथान मौजूद है इह पिंड महमा सरजा वज्जदा है जो कि भगता भायी का तो 30 कि. मी. दक्खन पच्छम भाव बठिंडे तों 33 कि. मी दक्खन अते जैतो तों 20 कि. मी पूरब पैदा है।

### सराए नागा जा सिक्खी दा बूटा लायआ

जदों गुरू साहब इथे पधारे सन तां इथे वी जोगियां दा बहुत वड्डा मट्ट हुन्दा सी। उनां नूं शबद दी महमा दस्स के नाम दे लड़ लायआ।

गुरू साहब जदों इथे आए तां डेरा उस थां कीता जित्थे अज्ज गुरदुआरा साहब मौजूद है। उदों इस शहर दा नां मत्ते दी सराय हुन्दा सी। इह शहर पूरन भगत भाव राजा सलवान दे वेल्यां दा सी। खुदायी दौरान इथों वड्डी इट्ट मिलदी है। जो 1500-2500 साल पहलां होया करदी सी। बाद विच्च मत्ते दी सराय बरबाद हो गया जदों किसे मुसलमान हमलावर ने इनूं लुट्ट्या पुट्ट्या सी।

इथे ही साहब ने करमू नां दा कोड़ी राजी कीता सी। किसे सूफी पीर नाल वी गल बात होन दा जिकर मिलदा है। दातन करन उपरंत गुरू साहब ने टहनी दबी सी जो अज्ज वी वण दे रुक्ख विच्च मौजूद है।

जदों दसम पातशाह इस थां आए तां इथे लंमी उमर दा जोगी रेहा करदा सी।

महाराजा रणजीत सिंध दे दौर विच्च इथे मनोहर दास नां दा नांगा साधू इलाके विच्च बहुत असर रसूख रक्खदा सी। महाराजे दे दीवान मोहकम चन्द ने जदों इह इलाका फतह कीता तां नांगे साधू नूं इलाके दी जगीर दे दिती। सो दुबारा होंद विच्च आई बसती फिर नांगे साधू दे नां ते चली।

### मरदाना चौथे पंजवें दिन जा पहुंच्या तलवंडी

सराय नागा तों मरदाना गुरू साहब तों विदा लैन लग्गा कहन लग्गा कि बाबा जी मिरासन लई की लै के जावां?

जानी जान बाबे ने जित्थे बैठे सन रोड़ां दी मट्ट भरी ते मरदाने नूं केहा लै पल्ले बन्न लै। आग्याकार मरदाने ने बिनां हील हुज्जत दे उह रोड़ पल्ले बन्न लए ते वक्खरा हो तलवंडी दा रुख कर गया। तुरन लग्गा बाबे नूं मान नाल हुकम कर गया कि बाबा हुन रसते विच्च ही कित्ते समाधी नां लग्ग जावे। परसों नूं तुसी सुलतानपुर होने चाहीदे हो। अन्दाज़ा है मरदाने ने चार कु दिनां विच्च 140 कि. मी. सफर तह कीता होवेगा। रसते विच्च रात कट्टन लई तां बाबे दियां ठाहरां जिवे कंगणपुर, चूणियां, उपल बसती आदि पहलां ही बण चुक्कियां सन।

सराय नागा तों गुरू साहब तों वक्खरा हो मरदाना चौथे दिन जा घर पहुंच्या। मिरासियां दे घर विच्च व्याह वरगा महौल बण गया सी। पुराने सम्यां च लाम ते गया जदों लंमां समां बन्दा घर नां परते नां मन्न ल्या जांदा सी कि उह चलाना कर गया है। सो मरदाने दा परतना तां इक्क दूसरा जीवन मिलन तुल सी। पिंड दा हर जग्यासू बच्चा बुद्धा मरदाने दे घर पहुंच गया सी।

माता त्रिपता तां इक्क पल तों पहलां मरदाने दे घर सी। जिवे जिवें घटनावां याद आ रहियां सन मरदाने नूं दस रहे सन। "बेबे बशीरां गुजर गई" "धी नामी दे दो अंजाने ने।" "आह शैतान सादिक दा पोतरा ई राय बुलार दे फौत होन दी खबर दिन्दां हर किसे दा चेहरा गमगीन हो गया। हर किसे ने केहा कि खुदा उनूं बहशतां च थां देवे। "राय अंत तक्क नानक नूं याद कर रेहा सी।"

ओधरो इक्क बच्चे ने आ के माता त्रिपता नूं केहा कि बापू तैनूं सद्दा प्या ई माता बोली, "ओनूं कह आउनी आं। ओनूं हमेशां छेती पई रहन्दी आ "मरदान्या आ दो पल घर।" "महता तैनूं वेखना चाहुन्दा ई।"

मिरासन नूं बीबी ते गुस्सा आ रेहा सी। पर कुझ बोल नही सी सकदी। बीबी त्रिपता आखिर मरदाने नूं नाल लै गई। महता कालू ने मरदाने नूं प्यार दिता ते कोल बैठा ल्या। मरदाने ने सारी रिपोरट दिती। बीबी त्रिपता दुद्ध दा गिलास भर ल्याई।

जदों महता कालू ने केहा कि नानक नूं आप लै के आउने हां तां मरदाने ने मन्हा कर दिता कि गुरू साहब खुद्द इक्क दो दिनां विच्च आ जाणगे। मरदाने ने केहा कि गुरू साहब दो चार दिनां च आए लयो। जे तुसी चले वी गए तां तुहाडा मेल नही होणां उह की पता केहड़े रसते तलवंडी आउन। महता जी ते माता चप्प हो गए।

जनानियां बन्दे सभ वधाई आं दे रहे सन। हर आए गए दा मूह मिट्टा करवायआ जा रेहा सी। बीबी ने गवांढ विच्च भाजी वंडन वासते लागणां सद्द लई आं सन।



बट्ट तीरथ- अबोहर इलाके दे स्टेशन पंज कोसी तों पच्छम वल इक्क कि. मी ते पिंड हरी पुर दे बाहर तलाब किनारे वी किसे वेले गुरू साहब बिराजे सन। उपरंत दसम पातशाह दा आउना वी लिख्या मिलदा है। अज्ज इथे वी शानदार गुरदुआरा शशोभित है। केहा जांदा है कि तलाब दी खुदायी वेले चरन पादुका ते होर वसतूआं निकलियां सन। अज्ज गुरदुआरा साहब अकाल गड्ढ कहाउदा है।

**जदों भैन, रब्ब रूपी भरा दे गल्ल लगग रोयी** ्व साउन दा महीना सी। बेबे नानकी नूं इक्क तां बिरहा, दूजा तपश ने लूहआ होया सी। चाणचक्क 'सति करतार' दी अवाज बेबे दे कत्रां च आ गूंजी। बेबे चीक उठी, "नी तुलसां थल्ले वेख, मैनु नानक दी वाज लग्गदी आ नौकरानी ने थल्ले झाती मारी। सच्चमुच्च नानकी दे घर उहदा रब्ब नानक वीर सी। जिवे बाहर मूंह कड्ड के वेख्या बदलवायी वी हो चुक्की सी। मीह वी बाबे दे नाल ही सुलतानपुर आ पहुंचा।

"तेरे दरसन विटहु खत्रीए वंजा तेरे नाम विटहु कुरबाणो ॥" भैन बाबे दे गल्ल लगग रोई। "वे ऐना चिर?" "तूं कोयी सुख सुनेहा ही भेज दित्ता हुन्दा।" अगो वीर कहन्दा कि बेबे जी! सैकड़े मील दूर हुत्रा वां किवे सुनेहा भेजदा। ओथे केहड़ा कोयी वाकफ हुन्दा है, "आइ न सका तुझ कनि प्यारे भेजिन सका कोइ ॥"

बेबे दे घर विच्च तां झट्ट व्याह वाला महौल बण गया। जेहड़ा वी सुने दौड़ा आए। "बाबा नानक आ गया।" "बाबा नानक आ गया।" नौकरानी नूं भेज बेबे जी ने

पतास्या दियां दो टोकरियां झट्ट मंगा लईआं सन। शामीं भाईआ जै राम वी आ गया ते सारी सुक्ख सांद ते देसां बदेसां दे हाल पुच्छे।

बेबे ने दस्स्या कि किवे मूला चोने दे नजरीए विच कोयी फरक नही आया अते अजे वी जिद्दां करदा रहन्दा वा। लखमी चन्द दी घर वाली दे गुजरन दी गल दस्सी। राय बुलार दे चलाने दी खबर दिती। बेबे ने बाबे नूं हुकम कीता कि तूं आप हुन पक्खोके जा। ओनां दा गुस्सा ठंडा होवे।

भैन भरा दे मेल उपरंत जदों महौल कुझ ठंडा होया तां फिर बाबे नूं निरंकार दी याद आई तां वडहंस राग विच्च शबद उचार्या:-

मोरी रुन झुन लायआ भैने सावनु आया ॥ तेरे मुंघ कटारे जेवडां तिनि लोभी लोभ लुभायआ ॥ तेरे दरसन विटहु खत्रीए वंजा तेरे नाम विटहु कुरबानो ॥ जा तू ता मै मानु किया है तुधु बिनु केहा मेरा मानो ॥ चूड़ा भन्नु पलंघ स्यु मुंघे सनु बाही सनु बाहा ॥ एते वेस करेदीए मुंघे सहु रातो अवरारा ॥ ना मनियारु न चूड़िया ना से वंगुडियाहा ॥ जो सह कंठि न लगिया जलनु सि बाहडियाहा ॥ सभि सहिया सहु रावनि गईआ हउ दाधी कै दरि जावा ॥ अंमाली हउ खरी सुचजी तै सह एकि न भावा ॥ माठि गुन्दाय ी पटिया भरीए माग संधूरे ॥ अगै गई न मन्निया मरउ विसूर विसूरे ॥ मै रोवन्दी सभु जगुरुना रुन्नड़े वणहु पंखेरू ॥ इकु न रुना मेरे तन का बिरहा जिनि हउ पिरहु विछोड़ी ॥ सुपनै आया भी गया मै जलु भर्या रोइ ॥ आइ न सका तुझ कनि प्यारे भेजिन सका कोइ ॥ आउ सभागी नीदड़ीए मतु सहु देखा सोइ ॥ तै साहब की बात जि आखै कहु नानक क्या दीजै ॥ सीसु वढे करि बैसन दीजै विनु सिर सेव करीजै ॥ क्यु न मरीजै जियड़ा न दीजै जा सहु भया विडाना ॥1॥3॥

सुलतानपुर लोधी

**नवाब दौलत खां लोधी ने गुरू साहब नूं केहा कि कोयी टिकाना बना के बह जाओ**

नवाब नूं जिवे पता लग्गा कि नानक आया है उस ने तुरंत सुनेहा भेज दित्ता कि नानक नूं कहो कि नवाब तेरे दरशन करनां लोचदा है। हुकम होवे तां आवां ?

क्युकि गुरू साहब आपने भणवईईए जैराम दे घर ठहरे सन जो कि नवाब दे मुताहत सी। नवाब दा जैराम दे घर जान ते प्रोटोकोल लागू हो जांदा सी जिस कारन नवाब सिद्धा गुरू नानक नूं मिलन नही सी आ सकदा। पर ओनी दिनी राजे महाराजे पीरां फकीरां दे आम ही आप जायआ करदे सन। पीर फकीर दे पक्के टिकाने नूं देहुरा केहा जांदा सी।

सुनेहा मिलन ते गुरू साहब आप बिनां देरी दे नवाब नूं मिलन गए। इस तां पहलां कि नवाब गुरू साहब अगै

**गुरधाम दीदार- 132**

इस असथान बारे कोयी साफ अन्दाजे नही लाए जा सके कि केहड़े पास्यो साहब आए होणगे। मातर सहूलत लई असी इस असथान दूजी उदासी विच रक्ख ल्या है।

◆ (सोढी 2- 607) मुताबिक मरदाना तलवंडी हुसंग गया सी। असी बथेरी पुच्छ पड़ताल कीती है पर सानूं इस नां दा पिंड पाकिसतान अते पंजाब विच नही मिल पायआ। भविख दे खोजी ध्यान विच रक्खण।

व सोढी : 2 -182, अनुसार गुरू साहब सावन दे महीने पट्टी पहुंचे सन। पिच्छीं राजसथान तां उनां दे तुरन दा वी जे हिसाब लईए तां वी उह सावन दे महीने ही पट्टी पहुंचे हन। इस शबद विच्च वी सावन ते भैन दा ही जिकर है। इक्क होर वी साफ इशारा है कि, " आइ न सका तुझ कनि प्यारे भेजिन सका कोइ ॥"

सो सराय नागा तां चलदे होए लोकायी दा उधार करदे गुरू साहब सुलतानपुर आ पहुंचे। अते फिर कुझ दिनां बाद तलवंडी जादे ने।

झुकदा गुरू साहब ने आप झुकक के सलाम-इ-लैकम कीता। नवाब ने गुरू साहब नूं जफ्फी विच्च लै ल्या। उलक मुल्लक दियां गल्लां बातां होईआं। नवाब ने बड़े सागीर (हन्दुसतान) दे राज्यां दे हाल चाल पुच्छे। लंमा समां गल्लां बातां हुन्दियां रहियां।

नवाब कहन लग्गा नानक एथे तेरियां गल्लां अकसर हुन्दियां रहन्दियां हन। मैनु पता लग्गदा है कि कई लोक तैनुं लभभदे इथे आउदे रहन्दे ने। मेरी गुजारिश है कि इर्थे जां होरे जित्ये चाहे आपना मुकाम (देहरा, मरकज जां हैडकुआरटर) बना लै। बहुत लोक निराश परतदे हन। कोयी टिकाना तां होना चाहीदा है जिथों लोकां नूं पता लग्ग सके। जदों लोक इथे आउदे हन तां कईआं नूं कह दित्ता जांदा है कि हो सकदा नानक तलवंडी होवे। उह विचारे ओथे खज्जल हुन्दे रहन्दे ने।

गुरू साहब ने नवाब नूं केहा कि तुहाडी सलाह बहुत नेक है। गुरू जी गल्ल नूं बहुत डूंघायी तक्क लै गए। नवाब नूं कहन लग्गे कि साडा देहरा जां मुकाम तां तह है ही। असी सारे खुदा दी पैदायश हां। साडा सभ दा असली ते आखरी टिकाना ओही है। असी सभ चक्कर च पए होए आ जा रहे हां। उंज हर कोयी इथे आपना मुकाम साजी बैठा है पर पता नही कदों उह मुकाम छड्डना पैना है। गुरू साहब ने स्त्री राग विच्च शबद कह नवाब नूं वी इशारा दित्ता कि ज्यादा आसां उमीदां नां ला। छेती ही तैनुं वी उस अंतम मुकाम लई रवाना होना पैना है।

मुकामु करि घरि बैसना नित चलनै की धोख ॥ मुकामु ता परु जाणीए जा रहै नेहचलु लोक ॥1॥ दुनिया कैसि मुकामे ॥ करि सिदकु करनी खरचु बाधहु लागि रहु नामे ॥1॥ रहाउ ॥ जोगी त आसनु करि बहै मुला बहै मुकामि ॥ पंडित वखानह पोथिया सिध बहह देव सथानि ॥2॥ सुर सिध गण गंधरब मुनि जन सेख पीर सलार ॥ दरि कूच कूचा करि गए अवरे भि चलणहार ॥3॥ सुलतान खान मलुक उमरे गए करि करि कूचु ॥ घड़ी मुहति कि चलना दिल समझु तूं भि पहूचु ॥4॥ सबदाह माह वखाणीए विरला त बूझै कोइ ॥ नानकु वखानै बेनती जलि थलि महियलि सोइ ॥5॥ अलाहु अलखु अगंमु कादरु करणहारु करीमु ॥ सभ दुनी आवन जावनी मुकामु एकु रहीमु ॥6॥ मुकामु तिस नो आखीए जिसु सिसि न होवी लेखु ॥ असमानु धरती चलसी मुकामु ओही एकु ॥7॥ दिन रवि चलै निसि ससि चलै तारिका लख पलोइ ॥ मुकामु ओही एकु है नानका सचु बुगोइ ॥8॥17॥

हालां मरदाने ने पक्का कीता सी कि बाबा तलवंडी छेती आ जावी नही तां बजुरग माता पिता नूं तुहाडे वल दौडना पैदा है फिर वी गुरू साहब नवाब दे कहन ते कोयी 15 दिन सुलतानपुर ठहर गए। रोज सतसंग लग्गदा सी जिस विच्च नवाब हाजरी भरदा सी। पर

जित्ये निरंकार दी गल्ल चलदी होवे बाबा ओथे सभ कंम रिसते नाते भुल्ल जांदा सी।◆

### बाबा कहन्दा "बाबा अलहु अगम अपारु" ्व

जदों नवाब ने फिर पुच्छ्या कि उह आखरी मुकाम केहो जेहा है?

अगले दिन फिर वेयी कंठे संगत जुड़ी। नवाब वी आ ग्या। अज्ज नवाब ने फिर पिच्छली गल्ल दे सबंध विच्च अगला सवाल कर दित्ता कि जे इह मुकाम झूठे हन ते असली मुकाम किथे करके है ते केहो जेहा है?

गुरू साहब ने केहा उह खुदा जां अल्लाह तां बेअंत है अथाह है अपरम्पार है। अज्ज तक्क उस तक्क कोयी नही अपड़ सक्या। जेकर 100 लिखारी इकट्ठे हो जान। उहदे तिल्ल जित्रे हिस्से नूं वी ब्यान नही कर सकदे जदों कि अकाल पुरख अथाह है: कई सूरज कई चन्द्रमे कई धरतियां अते अनेकां किसम दी इनां ते रचना।

मरदाने दी गैर हाजरी विच्च वजंतरियां दा इंतजाम बाबे ने कीता सी। नवाब अते होर संगत अग्गे फिर स्त्री राग विच्च इह अशटपदी गायी :-

आखि आखि मनु वावना ज्यु ज्यु जापै वाय ॥ जिस नो वाय सुणाईए सो केवडु कितु थाय ॥ आखन वाले जेतड़े सभि आखि रहे लिव लाय ॥1॥ बाबा अलहु अगम अपारु ॥ पाकी नायी पाक थाय सचा परवदिगारु ॥1॥ रहाउ ॥ तेरा हुकमु न जापी केतड़ा लिखिन जानै कोइ ॥ जे सउ सायर मेलियह तिलु न पुजावह रोइ ॥ कीमति किनै न पाईआ सभि सुनि सुनि आखह सोइ ॥2॥ पीर पैकामर सालक सादक सुहदे अउरु सहीद ॥ सेख मसायक काजी मुला दरि दरवेस रसीद ॥ बरकति तिन कउ अगली पडदे रहनि दरूद ॥3॥ पुछि न साजे पुछि न ढाहे पुछि न देवै लेइ ॥ आपनी कुदरति आपे जानै आपे करनु करेइ ॥ सभना वेखै नदरि करि जै भावै तै देइ ॥4॥ थावा नाव न जाणियह नावा केवडु नाउ ॥ जिथे वसै मेरा पातिसाहु सो केवडु है थाउ ॥ अम्बडि कोइ न सकयी हउ किस नो पुछनि जाउ ॥5॥ वरना वरन न भावनी जे किसै वडा करेइ ॥ वडे हथि वड्याईआ जै भावै तै देइ ॥ हुकमि सवारे आपनै चसान ढिल करेइ ॥6॥ सभु को आखै बहुतु बहुतु लैनै कै वीचारि ॥ केवडु दाता आखीए दे कै रहआ सुमारि ॥ नानक तोटि न आवयी तेरे जुगह जुगह भंडार ॥7॥1॥

-----◆-----

गुरू साहब ने नवाब नूं जवाब दित्ता कि,

'प्रचार करना ही मेरी किरत'

बेबे नानकी ने फिर भाईआ जैराम रांही नवाब नूं बेनती कीती कि नानक नूं तलवंडी जान दित्ता जावै। मापे उडीक करदे होणगे। भाईआ जी ने फिर सतसंग विच्च हाजर हो के नवाब नूं गुजारिश कीती कि जनाब नानक

नूं हुन हुकम करो कि तलवंडी पधारे। नही तां बजुरग मापे इधर नूं दौड़े आउणगे। इथे फिर नवाब ने गुरू साहब नूं बड़ी अधीनगी नाल बेनती कीती कि इक्क वारी तलवंडी फेरा पा आउ। तुसी 6 सालां बाद आए हो। मापे उडीकदे होणगे।

इह गल्ल जदों शुरू होयी तां सारी संगत ने गुरू साहब नूं बेनती कीती कि आपने टब्बर दा वी कुझ सोचो। तुहाडे दो बच्चे ने पतनी है।

गुरू साहब ने नवाब नूं केहा कि तुहाडियां गल्लां बिलकुल ठीक हन पर मेरा बैठ जाना मेरे वस्स नही। कुदरत ने हर किसे नूं कोयी नां कोयी कम दित्ता हुन्दा है। निरंकार ने मेरे जिमे इहो कम लायआ है। जिवे उहदा हुकम होवेगा करांगा। इथे गुरू साहब ने फिर गउड़ी राग विच्च हेक नाल इह शबद गाव्या:

किरतु पया नह मेटै कोइ ॥ क्या जाना क्या आगै होइ ॥ जो तिसु भाना सोयी हुआ ॥ अवरु न करनै वाला दूआ ॥1 ॥ ना जाना करम केवड तेरी दाति ॥ करमु धरमु तेरे नाम की जाति ॥1 ॥ रहाउ ॥ तू एवडु दाता देवणहारु ॥ तोटि नाही तुधु भगति भंडार ॥ किया गरबु न आवै रासि ॥ जीउ पिंडु सभु तेरे पासि ॥2 ॥ तू मारि जीवालह बखसि मिलाय ॥ ज्यु भावी ल्यु नामु जपाय ॥ तू दाना बीना साचा सिरि मेरै ॥ गुरमति देइ भरोसै तेरै ॥3 ॥ तन मह मैलु नाही मनु राता ॥ गुर बचनी सचु सबदि पछाता ॥ तेरा तानु नाम की वड्यायी ॥ नानक रहना भगति सरणायी ॥4 ॥10 ॥

अगले दिन गुरू साहब फिर तलवंडी नूरवाना हो गए।



### बाबा तूं साडे वल क्यो टिक्क टिकी लायी तक्की जा रेहै? पट्टी दे किरसानां ने पुछ्या

सुलतानपुर तों रवाना हो ब्यास पार करके, जित्थे अज्ज मुडापिंड है, जामाराय, सरहाली, हुन्दे होए पट्टी दे इलाके विच पहुंच चुके सन।

गुरू साहब पट्टी दे चडहदे पासे किसे छां थल्ले बैठे सन कि नेड़े चडहदे पासे किसानां दे दो हल्ह वग रहे सन। सावन दा महीना सी। गुरू साहब टाहली थल्ले खलो टिक टिका लायी उनां किरसानां नूं वेखी विसमाद होयी जा रहे सन। किवे गरमी विच्च वहाँ दाही लग्गे पए सन।

हालियां जदों वेख्या कि इक्क अतीत साधू टिक टिकी लायी वेखी ही जा रेहा है तां फिर हल रोक के उह वी गुरू साहब कोल आ गए ते पुच्छन लग्गे बाबा साडे च अजेहा की खास है जो तुसी साडे वल इस तरां लगातार वेख रहे हो?

गुरू साहब ने केहा मैं वेख रेहा हां ऐनी गरमी विच्च तुसी कित्री लगन नाल पैली वाह रहे हो। दुपेहर होन ते बाकी हाली जा चुके हन। तुसी बौलदां नूं मार कुट्ट रहे हो। ऐनी मेहनत काहदे वासते कर रहे हो?

अगो किरसान कहन लग्गे कि वेखो जी असीं वद्ध मेहनत इस करके कर रहे हां कि साडे धियां पुत्तर कल नूं ऐश दी जिन्दगी जीन। साडा मां बाप सुक्खी होवे। असी आपने शरीकां नालों अगो लंघणां है।

बाबा जी केहा ओए भोल्यो तुहानूं अहसास नही कि हर जिय दे सिर ते काल मंडरां रेहा है। जित्रां मोह तुसां वधायआ होया है तुसां नूं चित चेता ही नही कि इक्क दिन इह सभ कुझ छड्डुना पैना है। गुरू साहब ने फिर स्त्री राग विच्च बानी आखी:

इहु तनु धरती बीजु करमा करो सलिल आपाउ सारिगपानी ॥ मनु किरसानु हरि रिदै जंमाय लै इउ पावसि पदु निरबानी ॥1 ॥ काहे गरबसि मूडे मायआ ॥ पित सुतो सगल कालत्र माता तेरे होह न अंति सखायआ ॥ रहाउ ॥ बिखै बिकार दुसट किरखा करे इन तजि आतमै होइ ध्यायी ॥ जपु तपु संजमु होह जब राखे कमलु बिगसै मधु आस्रमायी ॥2 ॥ बीस सपताहरो बासरो संग्रहे तीनि खांडा नित कालु सारै ॥ दस अठार मै अपरम्परो चीनै कहै नानकु इव एकु तारै ॥

किरसानां दियां तां जिवे अक्खां खुल्ल जांदियां हन। सुन के गुरू साहब दे चरनां ते दह पए। कहन लग्गे दस्सो बाबा जी फिर की करीए। ओथे फिर गुरू साहब ने स्त्री राग विच्च इक्क होर शबद उचार दित्ता:

अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सच की आब नित देह पानी ॥ होइ किरसानु ईमानु जंमाय लै भिसतु दोजकु मूडे एव जानी ॥1 ॥ मतु जान सह गली पायआ ॥ माल के माने रूप की सोभा इतु बिधी जनमु गवायआ ॥1 ॥ रहाउ ॥ ऐब तनि चिकड़ी इहु मनु मीडको कमल की सार नही मूलि पायी ॥ भउरु उसतादु नित भाख्या बोले क्यु बूझै जा नह बुझायी ॥2 ॥ आखनु सुनना पउन की बानी इहु मनु रता मायआ ॥ खसम की नदरि दिलह पसिन्दे जिनी करि एकु ध्याया ॥3 ॥ तीह करि रखे पंज करि साथी नाउ सैतानु मतु कटि जायी ॥ नानकु आखै राह पै चलना मालु धनु कित कू संज्याही ॥

भायी नेक असूलां दे धारनी बणो। सच्च दे लड़ह लग्ग जायो। शबद दा सहारा लै के निरंकार दे दर पहुंचन लई यतन अरंभो।

इस तरां पट्टी दी लोकायी नूं निरंकार दे लड़ ला गुरू साहब अगो नूं जाहमन, पिंभ भैल, छांगा मांगा हुन्दे होए तलवंडी पहुंचे। ्व



### माता त्रिपता नूं जा मिल्या तलवंडी

गुरू साहब दी जिवे ही तलवंडी जान दी त्यारी होयी भाईए जैराम ने घोड़ा त्यार कर दित्ता। पर नवाब ने जिद्द कीती कि गुरू साहब नूं टांगे ते तलवंडी छड्डु के आया जाए। टांगे रांही पौने दो सो किलो मीटर दा सफर टांगे ने दो दिनां च कीता। ऐतकां गुरू साहब सिद्धे घर गए। माता त्रिपता ने घुट्ट के गल्ल नाल ला ल्या। मत्था चुंम्या।

"मां वारी। मां सदके। मेरा लाल! ऐना विछोड़ा। मां दी किथों याद आउनी आ।"

बाबे दे वी अथरूआं वाला नक्का टुट्ट ग्या। दोवे जिय खूब रोए। दुनिया पई वेखे।

एने नूं महता जी वी आ गए। गल्ल नाल लायआ। "वेखी कोयीं मुलख बाकी नां रह जाए।" महता जी दे प्यार दे अथरूआं अगगे गुस्सा गिला हावी हो ग्या।

क्युकि महता जी दे मन्न विच्च हमेशां रही है कि मुंडा निखट्टू निकल्या है। औखे सौखे व्याह वी कीता सी। नानक ने ओधर वी नमोशी ही पल्ले पुआई है। अगल्यां दी धी घर बैठी है। चोने सच्चे ने।

चाचे ताए बजुरग हर कोयी नानक नूं जप्फ़ी विच्च लै रेहा सी। फिर वारी चाचियां ताईआं दी आई। बच्चे बाबा नानक दे पैरी पै रहे सन। फिर चानन शाह ने माडी खबर बाबे नूं दित्ती, "तेरा यार वी गुजर गया ई : राय साहब।" गुरू साहब ने सोग ज़ाहर करदे होए केहा इह दुनिया मुसाफिरखाना।

फिर छोटे मेल (कमियां) दी वारी आई। बाबा वड्ड्यां नूं जप्फ़ी विच्च लै के मिल रेहा सी। इह इतहास विच्च पहली वार हो रेहा सी। उस जमाने विच्च जदों किसे कंमी नूं छूह जान ते नहाउना पैदा सी। बाबे नानक दी इस कारवायी ते वड्डियां जातां वाल्यां नूं गुस्सा वी आ रेहा सी। हर कोयी कह रेहा सी "क्युकि मरदाना जु नाल अट्टे पहर रहन्दा वा।"

हनेरा होन ते फिर माता त्रिपता ने अंजाण्यां नूं डाटना शुरू कर दित्ता कि जायो हुन घोरो घरीं। बच्च्यां दे जान बाद फिर हौली हौली वड्डे वी खिसक गए। माता बाबे नानक दी मंजी ते बह गई। बाबे दियां लत्तां घुटणियां चाहियां पर बाबे ने मन्हां कर दित्ता।

—◆—

### जदों माता वी बाबे दे नाल ही जाग उट्टी

अद्धी रात मसां ही टप्पी सी कि बाबा उट्ट खड़ा होया। खड़का सुन के बीबी दी वी अक्ख खुल्ल गई। आप खूही तों पानी कड्ड के दित्ता। गुरू साहब ने इशानान कीता।

गुरू साहब नूं जिवे पानी दा गिलास पीन नूं दित्ता माता फिर बोल उठी, "की साडी कदी तै नूं याद नां आई?" "चलो सानूं तां छड्डु आपने बाल बच्च्यां दा ही ख्याल कर ल्या कर।"

गुरू साहब ने आसा राग विच्च शबद ला दित्ता। महता कालू वी सभ सुन रेहा सी।

मेरा मनो मेरा मनु राता राम प्यारे राम ॥ सचु साहबो

आदि पुरखु अपरम्परो धारे राम ॥ अगम अगोचरु अपर अपारा पारब्रहमु परधानो ॥ आदि जुगादी है भी होसी अवरु झूठा सभु मानो ॥ करम धरम की सार न जानै सुरति मुकति क्यु पाईए ॥ नानक गुरुमुखि सबदि पछानै अहनिशि नामु ध्याईए ॥1॥ मेरा मनो मेरा मनु मान्या नामु सखायी राम ॥ हउमै ममता मायआ संगि न जायी राम ॥ माता पित भायी सुत चतुरायी संगि न सम्पै नारे ॥ सायर की पुत्री परहरि त्यागी चरन तलै वीचारे ॥ आदि पुरखि इकु चलतु दिखायआ जह देखा तह सोयी ॥ नानक हरि की भगति न छोडउ सहजे होइ सु होयी ॥2॥ मेरा मनो मेरा मनु निरमलु साचु समाले राम ॥ अवगन मेटि चले गुन संगम नाले राम ॥ अवगन परहरि करनी सारी दरि सचै सच्चारो ॥ आवनु जावनु ठाकि रहाए गुरुमुखि ततु वीचारो ॥ साजनु मीतु सुजानु सखा तूं सचि मिलै वड्ड्यायी ॥ नानक नामु रतनु परगास्या ऐसी गुरुमति पायी ॥3॥ सचु अंजनो अंजनु सारि निरंजनि राता राम ॥ मनि तनि रवि रहआ जगजीवनो दाता राम ॥ जगजीवनु दाता हरि मनि राता सहजि मिलै मेलायआ ॥ साध सभा संता की संगति नदरि प्रभू सुखु पायआ ॥ हरि की भगति रते बैरागी चूके मोह प्यासा ॥ नानक हउमै मारि पतीने विरले दास उदासा ॥4॥3॥

गुरू साहब ने फिर माता नूं इनां रिसते नात्यां दी असलियत समझायी कि इनां ने नाल नहीं जाणा। गुरू साहब ने फिर कह दित्ता कि मेरा मन्न तां निरंकार नाल जुड़ चुक्का है।

फिर माता वी पुच्छन लग्गी कि भगवान नाल मन्न किवे जुड़े? गुरू साहब ने केहा कि उहदा जरिया 'शबद' है। अकाल पुरख दी उसतत, उहदा जस्स। बाबे ने केहा कि उनूं तां हर जिय विच्च निरंकार दा ही रूप नज़र प्या आउदा है।

सवरे गुरू साहब राय बुलार दे घर मकान ते गए।

पिता महता कालू फिर गुरू साहब दे दुआले हो गया कि ओए आपने टब्बर दा वी कुझ सोच"। इह भादरों दा महीना सी: अगसत 1518 ई.।

—◆—

करतारपुर दे कौतक। भाग-1

### दो दर्यावां दा मेल

पक्खोके पहुंच गया बाबा

दो चार दिन तलवंडी रह बाबा लहौर थांनी हुन्दा होया पक्खोके अजिते रंथावे दे खूह ते पहुंच गया। इथे तां इक दम मेला ही लग गया। पिंड तों माता सुलक्खनी वी आ गई।

गुरू साहब दे मन्न विच वी हुन ख्याल सी कि कोयी टिकाना बना ही ल्या जावे। हौली हौली अजिते वाला खूह धरमसाल दी शकल लैना शुरू हो गया सी। साखियां तों लगदा है कि माता त्रिपता अते पिता कालू वी गुरू

◆ सोढी-374, वग्यानी -184, सोढी-377  
 ◆ वैसाखी सत्र 1517 ई नूं गुरू साहब उजैन सन, क्युकि नवम्बर 1517 नूं सिकन्दर लोधी दे मरन वेले आप पुशकर सन। पट्टी विखे सावन दा महीना चल रेहा सी। सो सावन सत्र 1574 बि. अरथात अगसत 1518 विच पट्टी विखे।

साहब कोल पहुंच चुके सन।

अजिते वाली धरमसाल ते हुन रौणकां लगियां रहन्दियां ने। लंगर चलदे ने।

### जदों भुंजे ही बैठा रेहा दो दिन◆

माता चोनी ने माता त्रिपता नूं हौली जेही शकायत कीती कि बाबा मेरे घर तां फेरा ही नहीं पाउदे। इथे आ के वी बस साधां संतां धारमिक बन्द्यां नाल इनां दी गल्ल गोशटी चलदी रहन्दी आ फिर माता ने केहा होवेगा ते हुकम मन्न के इक्क वेरां फिर माता चोनी दे घर गए जो गुरू साहब दे जद्दी घर दे नाल ही सी। (पर अगली साखी विच्च गल्ल धरमसाल दी वी है)

माता घुंमी ने गुरू साहब दा बहुत सतिकार कीता। ग्रिसत दियां गल्लां बातां सहुरे सस्स दियां शकायतां चुगलियां वी लाईआं होणगियां। कुझ चिर बाद गुरू साहब ने लागे पई सफ विछायी ते कंध नाल लग्ग के बह गए। गुरू साहब ज्यो बैठे अट्टे पहर एसे अवसथा विच्च बिराजे रहे। माता घुंमी ने थोडा बहुत हिलाउन दी कोशिश कीती पर गुरू साहब ने इशारा कर दित्ता कि सानूं छेड़्या नां जाए।

हार माता घुंमी जा सस्स कोल फर्यादी होयी कि बाबे दा आउना नां आउना सभ बराबर है। कहन लग्गी माता जी आ के वेखो दो दिनां तों उथे सत्थर ते अजेहे बैठे ने कोयी हिल जुल नही रहे।

माता तुरंत सुलक्खनी माता दे घर आई ते आ के गुरू साहब नूं हिलायआ जुलायआ। साहब नूं टुम्ब्या कि कदी सौ वी जायआ कर। वेख तेरियां अक्खां किवे लाल होईआं पईआं ने।

क्युकि माता घुंमी दी शकायत ते माता त्रिपता आए सन। गुरू साहब ने केहा कि माता दस्स मैं किवे करां मेरा पती जागदा प्या मैं किवे सौ जावां। उथे साहब ने फिर सुर विच्च आ के माता घुंमी दे प्रथाय बानी बोली पर मूल विच्च आपने पती नाल प्यार दी गल्ल है। विच्च विच्च किते माता घुंमी दी शकायत जां विअंग वी है। "प्रेमु न चाख्या मेरी तिस न बुझानी ॥" :-

आसा महला 1 ॥ एक न भरिया गुन करि धोवा ॥ मेरा सहु जागै हउ निसि भरि सोवा ॥1 ॥ इउ क्यु कंत प्यारी होवा ॥ सहु जागै हउ निस भरि सोवा ॥1 ॥ रहाउ ॥ आस प्यासी सेजे आवा ॥ आगै सह भावा कि न भावा ॥2 ॥ क्या जाना क्या होइगा री मायी ॥ हरि दरसन बिनु रहनु न जायी ॥1 ॥ रहाउ ॥ प्रेमु न चाख्या मेरी तिस न बुझानी ॥ गया सु जोबनु धन पछुतानी ॥3 ॥ अजे सु जागउ आस प्यासी ॥ भईले उदासी रहउ निरासी ॥1 ॥ रहाउ ॥ हउमै खोइ करे सीगारु ॥ तउ कामनि सेजे रवै भतारु ॥4 ॥ तउ नानक कंतै मनि भावै ॥ छोडि वडायी आपने खसम समावै ॥1 ॥ रहाउ ॥26 ॥

### माता बोली, "दस्स आ शाहरुक की पई आखदी ए?"◆

गुरू साहब तलवंडी बराजमान सन कि कोठे ते शहरक (गटार जां लाली जां देसी मैना) बैठी रंग रंग दी आवाजां कड्ड रही। सार्यां दा ध्यान शहरक वल हो ग्या। हर कोयी हस्स हस्स दोहरा हो रेहा सी। माता त्रिपता ने झट्ट गुरू साहब नूं अड़ाउनी पा दित्ती। कहन लग्गी वे नानका तूं सारा जहान फर्यां ए इह दस्स इह शहरक की आख रही ए?

गुरू साहब वी माता दा सवाल सुन के मुसकरा पए। कहन लग्गे मैं बन्दा हां मैं कोयी पंछी थोडा हां जेहड़ा जानवरां दियां गल्लां समझां। माता फिर विअंग कस्सन लग्ग पई। ते नाल ही कहन लग्गी नानक नूं सारा पता है। इह हर जिय दे दिल दी गल्ल जाणदा है।

गुरू साहब ने फिर नांह कीती पर माता जिद् ते आ गई।

लागे भायी दास भट्ट (किते नां दासू वी आउदा है) बैठा सी। गुरू साहब ने भायी दास नूं केहा कि दास तूं ही दस्स दे कि इह शहरक की कह रही है? भायी दास ने हथ जोड़े तां केहा कि गुरू जी साडी एनी औकात किथे। गुरू साहब ने दास दे सिर ते हथ रक्ख्या ते भायी दास दे सारे बन्द किवाड़ खुल्ल गए। गुरू साहब ने केहा भायी दास हुन दस्स इह पंछी की कह रेहा है?

भायी दास शुरू हो ग्या। कहन लग्गा जी शहरक मैंनुं सुनेहा दे रही है कि दास तूं सभ भुल्ल भुला के बैठा ए तेरा वकत नेडे आ गया ए तूं सिरफ अट्ट दिन हीर जिन्दगी जिय लै।

हुन सारा हासा गम विच्च तबदील हो ग्या। गुरू साहब ने भायी दास नूं दिलासा दित्ता कि इथे हर जिय दे सिर ते मौत कूकदी है। सभ ने जाना है ते तूं भागां वाल्या निकल्यो जिस ने आपना आउन वाला समां वेख ल्या है।

दास भट्ट दा वी वैराग छुट्ट ग्या। कहन लग्गा बाबा तूं ही मेरा माता है तूं ही मेरा पिता है। मैंनुं इह अट्टे दिन आपने चरनां नाल लायी रक्ख। गुरू साहब ने केहा नही पुरखा तूं आपने घर पहुंच। आपने पुत्रां धियां परवार दे हल्यी रवाना होणां।

◆ सोठी 2-315, इथे इह वी जिकर मिलदा है कि गुरू साहब 12-13 साल बाद घर परते हन।

इस साखी तों लग्गदा है कि गुरू के महल वी तलवंडी आ गए सन ते तलवंडी उनां दा वखरा कमरा जां घर सी। बेदी सहबजाघां दा तां इहो मन्नना है कि बाबा सी चन्द ते लखमी दास दी पालना तलवंडी ही होई। (देखो बाबा सी चन्द- बाबा दिलजीत सिंघ बेदी : भाशा विभाग)

कुझ वी होवे कुझ समे बाद माता चोनी पक्खोके आ गए सन। फिर इथे धरमसाल दा वी जिकर है। सो इहो कहना पवेगा कि अजिते रंथावे दे खूह ते 1518 विच्च ही आ गए सन।



दास कहन लगा बाबा जी मेरी इक्क प्रारथना है। मेरे कोल कोयी लक्ख टका इकट्टा होया प्या है। मेरे पुत्तर सभ कमाउदे खांदे ने। किसे चीज़ दी कोयी तोट नही। मेरी भट्ट रानी ते तुहाडा अशीरवाद भर्या हत्य रहेगा। किरपा करो मैं उह लक्ख टके धरमसाल दे लेखे ला द्यां। गुरू साहब ने हुकम कीता कि तेरे पैसे ते तेरे प्रवार दा हक्क है। इस प्रकार दास भट्ट दे ज्यादा जिद्द करन ते कुझ रकम गुरू घर दी धरमसाल वासते लैन लई सतिगुरू जी राजी हो गए।

दास भट्ट ने फिर गुरू साहब दा रच्या शबद बाबा जी दे सनमुख हो शबद गाव्या:

गउड़ी चेती महला 1 ॥ कत की मायी बापु कत केरा किट्टू थावहु हम आए ॥ अगनि बिम्ब जल भीतरि निपजे काहें कंमि उपाए ॥1॥ मेरे साहबा कउनु जानै गुन तेरे ॥ कहे न जानी अउगन मेरे ॥1॥ रहाउ ॥ केते रुख बिरख हम चीने केते पसू उपाए ॥ केते नाग कुली मह आए केते पंख उडाए ॥2॥ हट पटन बिज मन्दर भत्रै करि चोरी घरि आवै ॥ अगहु देखै पिछहु देखै तुझ ते कहा छपावै ॥3॥ तट तीरथ हम नव खंड देखे हट पटन बाजारा ॥ लै कै तकड़ी तोलनि लागा घट ही मह वणजारा ॥4॥ जेता समन्दु सागरु नीरि भर्या तेते अउगन हमारे ॥ दया करहु किछु मेहर उपावहु डुबदे पथर तारे ॥5॥ जियड़ा अगनि बराबरि तपै भीतरि वगै काती ॥ प्रणवति नानकु हुकमु पछानै सुखु होवै दिनु राती ॥6॥5॥17॥

गुरू साहब तों अशीरवाद लै फिर भायी दास आपने पिंड नूरवाना हो गया।

माता त्रिपता दास भट्ट ते गुरू साहब दी सारी गल्ल बात सुणदी रही। गुरू साहब विच्च हुन उस दा भरोसा बइझ चुक्का सी कि उसदा पुत्तर निरंकार दा रूप है। पर केहा जांदा है कि उह मायआ मोह तों उपर नही सी उठ पाई।

### ‘बिनु दम के सउदा नही हाट ॥’

इनां ही दिनां विच्च इलाके विच्च कोयी साधू हट्ट करके गुजर गया। अकसर ही साधू इह कुझ कर ल्या करदे सन। कोयी खाना पीना छड्ड दिन्दा सी कोयी उच्ची थां तों छाल मार दिन्दा सी कोयी जीदे जिय भारे विच्च बन्द हो जांदा सी। गुरू साहब ने उपदेश दित्ता कि निरंकार नाल तुसी इहाँ जेही जिद्द नही कर सकदे। रब्ब दे

◆ सोदी 2- 319. लगदा है कि गुरू घर नाल भट्टां दा जो रिश्ता बणदा है उह इसे दास भट्ट करके ही होंद विच्च आउदा है।

जनम साखी अनुसार भायी मरदाना वी मौजूद हुन्दा है। जिसदा मतलब है गल्ल 1518 दी ही लगदी है। धरमसाल पक्खोके। सोदी 2 - 329/330 ते तां साफ ही लिख्या है कि रावी दे किनारे बैठा सी ते 12 साली आया है। ◆ सोदी 2-326। सोदी 2 -329/330 ते तां साफ ही लिख्या है कि रावी दे किनारे बैठा सी ते 12 साली आया है। मतलब कि साहब तलवंडी वी गए ते

मिलाप विच्च जोर जां हट्ट सहायी नही हुन्दा। इस नाल निरंकार दी खुशी प्रापत नही हुन्दी सगौ हुकम अदूली हुन्दी है। उहदे हुकम विच्च चलना ही उहदी प्रापती दा साधन है।

बाकी गुरू साहब ने केहा कि पैसे बिनां सौदा नही हुन्दा। एसे प्रकार गुरू बिनां गती नही है।

गउड़ी महला 1 ॥ हठु करि मरै न लेखै पावै ॥ वेस करै बहु भसम लगावै ॥ नामु बिसारि बहुरि पछुतावै ॥1॥ तूं मनि हरि जीउ तूं मनि सूख ॥ नामु बिसारि सहह जम दूख ॥1॥ रहाउ ॥ चोआ चन्दन अगर कपूरि ॥ मायआ मगनु परम पदु दूरि ॥ नामि बिसारिऐ सभू कूड़ो कूरि ॥2॥ नैजे वाजे तखति सलामु ॥ अधकी त्रिसना व्यापै कामु ॥ बिनु हरि जाचे भगति न नामु ॥3॥ वादि अहंकारि नाही प्रभ मेला ॥ मनु दे पावह नामु सुहेला ॥ दूजै भाय अग्यानु दुहेला ॥4॥ बिनु दम के सउदा नही हाट ॥ बिनु बोहथ सागर नही वाट ॥ बिनु गुर सेवे घाटे घाटि ॥5॥ तिस कउ वाहु वाहु जि वाट दिखावै ॥ तिस कउ वाहु वाहु जि सबदु सुणावै ॥ तिस कउ वाहु वाहु जि मेलि मिलावै ॥6॥ वाहु वाहु तिस कउ जिस का इहु जीउ ॥ गुर सबदी मथि अंमृतु पीउ ॥ नाम वडायी तुधु भानै दीउ ॥7॥ नाम बिना क्यु जीवा माय ॥ अनदिनु जपतु रहउ तेरी सरणाय ॥ नानक नामि रते पति पाय ॥

### माता नूं आख्या कि मोह छड्ड दे ॥

गुरू साहब इक्क दिन रावी दे कंठे जा बिराजे ते शाम तक बिना कुझ खाथे पीते बैठे रहे। शामी माता त्रिपता नूं चिंता होयी ते उस पुच्छना कीती कि किसे ने बाबे नूं वेख्या होवे तां इक्क किसान ने दस्स्या कि बाबा तां रावी कंठे बैठा होया है। माता उस किसान नूं लै के गई ते जा के गुरू साहब दे साहमने बहुत रोयी पिट्टी कि तूं आपना ध्यान नही रक्खदा। किसान वी बाबे नूं कहन लगा कि कुझ तां ख्याल कर्या करो मा दा, इह मर मर जा रही है। गुरू साहब ने केहा कि माता मोह विच्च फसी पई है। गुरू साहब ने दस्स्या कि मोह वी वड्डी पुआड़े दी जड़ह है। मोह करके ही बन्दा कई बुराईआं वी कर जांदा है। साहब ने रावी कंठे शबद उचार्या ते उच्ची सुर विच्च गायआ:

आसा महला 1 पंचपदे ॥ मोहु कुटम्बु मोहु सभ कार ॥ मोहु तुम तजहु सगल वेकार ॥1॥ मोहु अरु भरमु तजहु तुम्बीर ॥ साचु नामु रिदे रवै सररीर ॥1॥ रहाउ ॥ सचु नामु जा नव निधि पायी ॥ रोवै पूतु न कलपै मायी ॥2॥ एतु मोह डूबा संसारु ॥ गुरमुखि कोयी उतरै पारि ॥3॥ एतु मोह फिरि जूनी पाह ॥ मोहे लागा जम पुरि जाह ॥4॥ गुर दीख्या लै जपु तपु कमाह ॥ ना मोहु तूटे ना थाय पाह ॥5॥ नदरि करे ता एहु मोहु जाय ॥ नानक हरि स्युर है समाय ॥